सीखने–सिखाने की ओर एक क़दम

सोनिया कुंडू

पाँच-साढ़े पाँच साल के बच्चों को मौखिक भाषा से लिखित भाषा तक कैसे ले जाया जा सकता है; विभिन्न उपकरण इसमें सहायक कैसे हो सकते हैं; और कहानियों, नाटकों या चित्रों की इस प्रक्रिया में क्या भूमिका हो सकती है? यह लेख इन्हीं सवालों का व्यवहारिक जवाब देता है। अपनी कक्षा में बुनियादी भाषा सिखाने की प्रक्रिया में लेखिका ने कहानियों, नाटकों, चित्रों, आदि उपकरणों का इस्तेमाल किया और नतीजतन बच्चों की भाषा सीखने की गति बढ़ी। चार महीने तक चली इन कक्षा प्रक्रियाओं से बच्चे मौखिक भाषा से आगे बढ़ते हुए लिखित भाषा के शब्दों को पहचानना और उनको सरल रूप में लिखना सीख सके। -सं.

नए स्कूल की नई कक्षा थी। मेरे सामने एक चुनौती थी। मुझे लगभग पाँच से साढ़े पाँच साल की उम्र के बच्चों को भाषा के चिह्नों, लिखावट, शब्दों की बनावट, शब्दों के उच्चारण और सुसंगत मौखिक अभिव्यक्ति जैसे आयामों पर काम करना था। इससे पहले भी मैंने बच्चों के साथ इन मुद्दों पर काम किया था, लेकिन वहाँ की परिस्थितियाँ बिलकुल अलग थीं। पहले के अनुभव शहरी क्षेत्रों के नामी प्राइवेट स्कूलों से जुड़े हुए थे। इन स्कूलों में आने वाले ज़्यादातर बच्चे मध्यम वर्गीय कामकाजी पढ़े-लिखे परिवारों से आते थे। ऐसे में अभिभावकों की अपेक्षाएँ और घर का माहौल भी बच्चों की एक स्तर तक मदद कर पाता था, और इनका असर उनकी शैक्षणिक क्षमताओं पर स्पष्ट नज़र आता था। पर यह जगह नई थी, बच्चों का परिवेश और परिस्थितियाँ अलग थीं। एक बड़ी चुनौती यह भी थी कि कोविड के दौरान कक्षाओं का अनियमित संचालन हुआ। इस दौरान बच्चे कम समय के लिए ही कक्षाओं में मिल पाए। पिछले साल ये बच्चे एलकेजी में थे और अब यही यूकेजी में हैं। अब इस स्तर पर उनसे जुड़ी अपेक्षाएँ पिछले वर्ष की तुलना में अधिक हैं। मसलन, बच्चे आम बातचीत और कहानियों को ध्यान से सुनें, छोटी कविताओं व एक्शन गानों को दोहराएँ, और मातृभाषा में संगीत व लयबद्ध गतिविधियों में भाग लें। वे बोलते समय नई शब्दावली का प्रयोग करें, सरल वाक्यों में बोलने में सक्षम हों, और मातृभाषा के साथ-ही-साथ दूसरी भाषा में भी सहजता हासिल करते हुए उसका उपयोग कर पाएँ। बच्चे मौखिक अभिव्यक्ति के साथ-साथ पढ़ने और लिखने में भी सहज होने की ओर अग्रसर हों, ध्वनियों-शब्दों को समझ सकें, उनमें जोड़-तोड़ कर सकें, उन्हें लिख सकें, आदि।

मैं पहले ही कह चुकी हूँ कि इन बच्चों को औपचारिक स्कूली परिवेश में ढलने के उतने अवसर नहीं मिले जितने मिलने चाहिए थे। इसका परिणाम इस रूप में सामने आया कि बच्चे अभी भी स्कूल आने, लम्बे समय तक एक स्थान पर बैठने जैसे बुनियादी मसलों से ही जूझ रहे थे। कहने का तात्पर्य यह कि सबकुछ शुरुआत से ही करना था। चुनौती व्यक्तिगत स्तर पर भी थी। इतनी छोटी उम्र के बच्चों के

साथ काम का कोई अनुभव न होना कोई कम बड़ी चुनौती तो है नहीं!

कक्षा में किए गए प्रयास

अब तक मैं यह पढ़ती आई थी कि भाषा शिक्षण के लिए सबसे कारगर पद्धति समग्र भाषा शिक्षण है। मैंने इसी प्रक्रिया से पढ़ाने की शुरुआत की। यह तरीक़ा शुरुआत में कारगर भी नज़र आया, लेकिन जैसे ही बात मौखिक भाषाई कौशलों से आगे बढ़ते हुए पढ़ने और लिखने की ओर बढ़ी, मुझे कुछ और चुनौतियाँ भी नज़र आने लगीं। बात जब ध्वनियों के साथ अक्षर की पहचान पर आई, वहाँ मुझे ख़ुद के द्वारा अपनाई जाने वाली प्रक्रियाओं में कुछ गैप महसूस होने लगा क्योंकि अपेक्षित सफलता नहीं मिल रही थी।

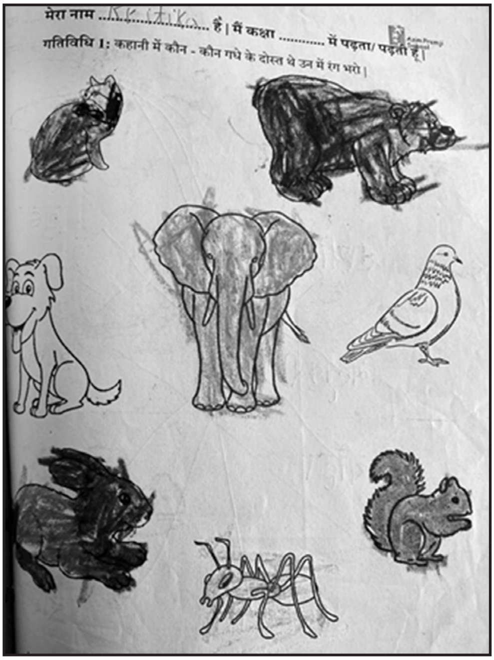
अब तक अपनाई जा रही प्रक्रिया में मैंने कुछ और गतिविधियों को जोड़ा, विशेषकर ध्वनि की पहचान के लिए। इसके लिए एक कहानी का चयन कर उसके ज़रिए बच्चों के साथ अक्षरों की बनावट, ध्वनि और उनसे जुड़े शब्दों पर काम किया गया। कहानी से वाक्यों, वाक्यों से शब्दों और शब्दों से ध्वनियों तक आने का यह सफ़र रोचक और महत्त्वपूर्ण रहा। इस अनुभव का संक्षिप्त रूप प्रस्तुत है।

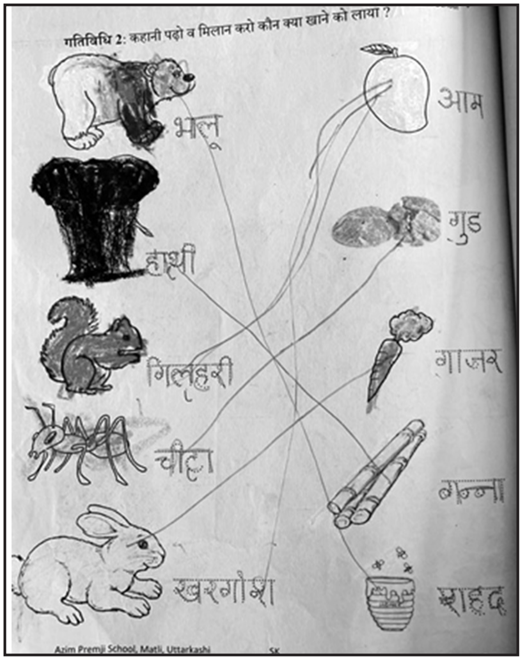
अभी तक के अनुभवों के आधार पर मैंने पाया कि कहानी पठन प्रारम्भिक कक्षाओं के बच्चों के लिए सबसे मज़ेदार चीज़ों में से एक है। इसी सोच के साथ एक कहानी ली गई। यह कहानी मेरे लिए होल लैंग्वेज अप्रोच से काम करने की शुरुआत का एक नमूना बनकर सामने आई।

इसके लिए सबसे पहले कहानी का चयन करना था। यहाँ ज़्यादा सोचने की ज़रूरत नहीं पड़ी क्योंकि एनसीईआरटी की थीमों के आधार पर ही हमने अपनी वार्षिक योजना बनाई थी। इन्हीं थीमों में से एक उप-थीम 'जानवर' को मैंने चुना। इसी के मुताबिक़ एक ऐसी कहानी ('मिठाई' *बरखा* सीरीज़) का चयन किया गया जिसमें कई प्रकार के जानवर थे। चूँकि छोटे बच्चे खेलना पसन्द करते हैं, इसलिए कक्षा में खेल पद्धति का प्रयोग किया गया। अगले दिन बच्चे जैसे ही कक्षा में आए, उन्होंने दीवारों पर कुछ जानवरों के मास्क लटके देखे। मास्क देखते ही बच्चे उन्हें छूने, पकड़ने और उनसे खेलने के लिए उतावले होने लगे। जैसे ही तरह-तरह के ये फ़ेस मास्क उन्हें मिले, उन्होंने उनके इर्द गिर्द अपनी ही खेल कहानियाँ बनानी शुरू कर दीं। इस दौरान उन्हें एक दूसरे से बात करने, समझने-समझाने और अपनी कल्पनाओं को उड़ान देने का मौक़ा मिला।

इस खेल के दौरान मैंने पाया कि बच्चे ज़्यादातर मास्क वाले जानवरों की ख़ासियतों को ही केन्द्र में रखकर खेल रहे थे। दो बच्चे







एक रोल-प्ले जैसा करते दिखे। इनमें एक बच्ची मालिक बनी और दूसरा बच्चा गधा। फिर मालिक बनी बच्ची अपने गधे को नदी से रेत ढोने ले जाती है। वहाँ गधे को भूख लगती है और मालिक बनी बच्ची भागकर कुछ खाने को लाती है। जो बच्चा गधा बना था वो खाने में आना-कानी करता है, तब मालिक बनी बच्ची बड़े प्यार से अपने गधे से कहती है, “अभी ये खा ले मेरे दोस्त, फिर मैं तुझे अच्छी-अच्छी मिठाई दूँगी।” इस खेल को देखकर यह अनुमान लगा पाना बेहद सरल था कि बच्चे अपने परिवेश से जो सीखते हैं, वो उनकी कल्पनाओं को बुनने और आगे ले जाने में मदद करता है। एक और ज़रूरी बात यह रही कि कक्षा की एक बच्ची, जो आमतौर पर दूसरे बच्चों के साथ शायद ही किसी गतिविधि में हिस्सा लेती हो, इस दौरान गधे के संवेदनशील मालिक के रूप में नज़र आई। उसने गधे को मनाने के अलग-अलग उपाय किए। ध्यान देने वाली एक और बात यह भी हुई कि बच्ची ने रोल-प्ले में अपने गधे को मिठाई ही खिलाने का वादा किया। इसका कारण है, कक्षा में उपलब्ध कहानियों की किताबें, जहाँ बच्चे अपनी इच्छा से कोई भी किताब ले सकते हैं। ज़ाहिर-सी बात है, वे अपनी ओर से उस कहानी को पढ़ ही रहे होते हैं लेकिन चित्रों के माध्यम से। संयोग की बात है कि जिस कहानी को मैंने चुना था, उसे ये बच्चे पहले ख़ुद-से पढ़ चुके थे।

अब बारी आई फ्री प्ले के दौरान किए गए प्रयास को आकार देने की। सभी बच्चों ने सर्कल टाइम में जानवरों से जुड़े अपने-अपने अनुभव साझा किए। इन सभी की बातों में गधे, बिल्ली और बाघ से जुड़े अनुभव ज़्यादा थे, वहीं बच्चे गिलहरी से ज़्यादा परिचित नहीं थे।

अब आते हैं कहानी पर। सबसे पहले कहानी पूरे हाव-भाव और फ़ेस मास्क की मदद से सुनाई गई। कहानी सुनाने के बाद बच्चों को यह किताब भी दी गई। ऐसा करने के पीछे इस छोटी-सी कहानी के ज़रिए कुछ बड़े उद्देश्यों की ओर बढ़ना था। मसलन, सुनी हुई कहानी को मूर्त रूप से चित्रों के माध्यम से देख पाना और लिखे हुए शब्दों को बाईं से दाईं ओर पढ़ पाना। यहाँ पढ़ने से तात्पर्य, प्रिडिक्ट रीडिंग से

है। जब बच्चे इन शब्दों को चित्रों के ज़रिए पढ़ पाते हैं, तब उनमें यह आत्मविश्वास जागता है कि वे भी पढ़ सकते हैं।

इन उद्देश्यों के लिए किए गए प्रयास व गतिविधियाँ

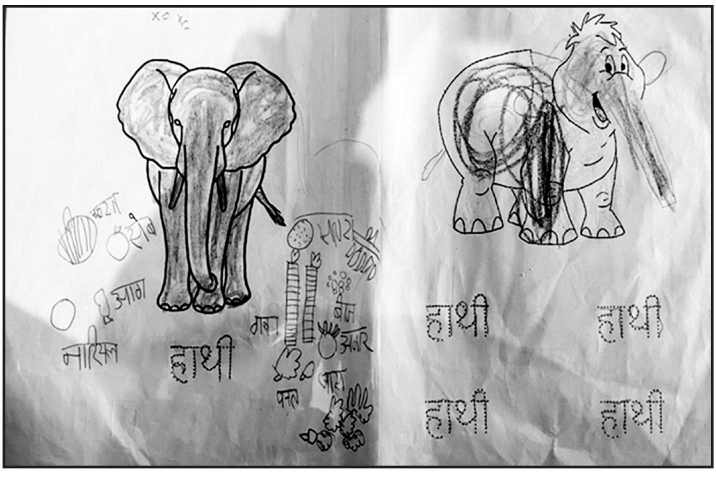
अब उस कहानी में आए जानवरों व खाने की चीज़ों के बड़े फ़्लैश कार्ड बनाकर कक्षा में लगा दिए गए। ये फ़्लैश कार्ड उनके लिए चित्र और शब्द के सम्बन्ध बनाने के सन्दर्भ के रूप में काम आए। इनसे बच्चे चित्र के साथ जोड़कर नाम भी पढ़ने लगे। जैसे– हाथी, भालू, आदि।

आगे इसी कहानी के इर्द गिर्द कुछ स्तरों में बाँटकर कई वर्कशीटें बनाई गईं। इन वर्कशीटों में बच्चों को सबसे पहले हाथी के चित्र को पूरा करना; वह क्या खाता होगा, यह सोचकर चित्र बनाना; कहानी में गधे के दोस्त कौन-कौन थे, यह पहचानकर रंग भरना; और चित्र से उनके नाम को मिलाना था। इस गतिविधि का उद्देश्य परिवेश में उपलब्ध सन्दर्भों व चित्रों के अनुसार छपी हुई सामग्री को देख / पढ़कर समझ पाना और पढ़ी हुई कहानी का समझ के स्तर पर आकलन कर पाना था।

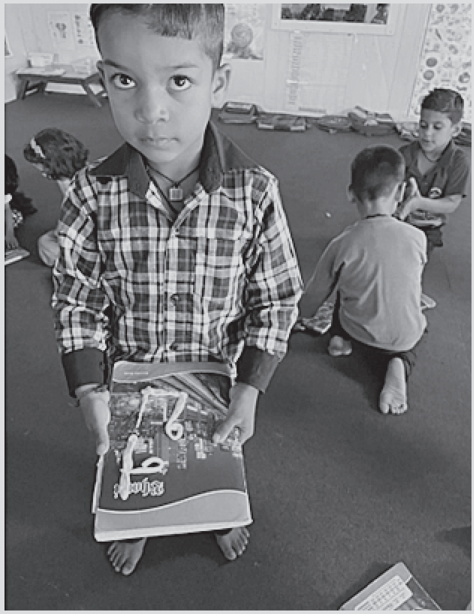
कहानी और वर्कशीट के साथ ही बच्चों में हिन्दी वर्णों की पहचान बनाने के लिए रेत पर लिखने और मिट्टी से वर्णों की आकृति बनाने जैसे काम किए गए। इनका उद्देश्य कहानी से शब्द और शब्दों से वर्णों / ध्वनियों पर समझ (मौखिक और लिखित) बना पाना था।

आओ नाटक खेलें

इस कहानी को नाटक के रूप में भी बच्चों के साथ खेला गया। बच्चों से जानवरों के नाम के कार्ड को धागे से बाँधकर गले में पहनने को कहा गया। इससे वे अपने पात्र को याद रख पाने में सक्षम रहे। इस गतिविधि में बच्चों ने कहानी के सभी किरदारों के साथ बहुत अच्छे-से खेला और अपने शब्दों में नाटक प्रस्तुत किया। इस दौरान मैंने बच्चों में कहानी को लेकर एक खेल का भाव भी पाया। जिन बच्चों ने नाटक में भाग नहीं लिया था, वे भी नाटक को समझे थे, और बाद में वैसा ही करने की कोशिश कर रहे थे। शायद वे इसे खेल और सेल्फ़ गाइडेंस की तरह ले रहे होते हैं। इससे कहानी में रुचि उत्पन्न हुई और बच्चों के मन में जानवरों व खाने-पीने की चीज़ों के नामों की एक प्रतीकात्मक छवि बन गई थी, क्योंकि अब वे शब्दों की बनावट के आधार पर यह बता पा रहे थे कि दी गई वस्तु का नाम क्या है। इसी दिशा में एक और गतिविधि की गई। इस गतिविधि में कहानी के वाक्यों से शुरू करते हुए बच्चों को यह समझना था कि वाक्य कई शब्दों से मिलकर बना है, और शब्द अलग-अलग वर्णों / ध्वनियों के एक साथ आने से। कहानी में आईं बातों, जो वाक्यों में लिखी गई थीं, के सार्थक टुकड़े करके बच्चों को यह समझना था कि वाक्य शब्दों के सार्थक मेल से बनते हैं। साथ ही, ध्वनि की पहचान के लिए शब्दों में अन्तर स्पष्ट होना बेहद ज़रूरी है। जब छोटे बच्चे अपने आसपास बोली जाने वाली भाषा अर्जित करते हैं, वे उसे पूरी-की-पूरी अर्जित करते हैं न कि ध्वनियों,







शब्दों या वाक्यांशों के रूप में। लेकिन मौखिक से लिखित भाषा की तरफ़ बढ़ते हुए यह ज़रूरी हो जाता है कि बच्चे ध्वनियों और उनके उपयोग को समझें। "बच्चे यह समझें कि बोली जाने वाली भाषा को छोटी-छोटी इकाइयों में तोड़ा जा सकता है, और इन्हीं छोटी इकाइयों में हेर-फेर कर या उन्हें संयोजित कर शब्द और वाक्य बनाए जा सकते हैं।" (यॉप एवं यॉप 2000)

गोले में कूद लगाओ

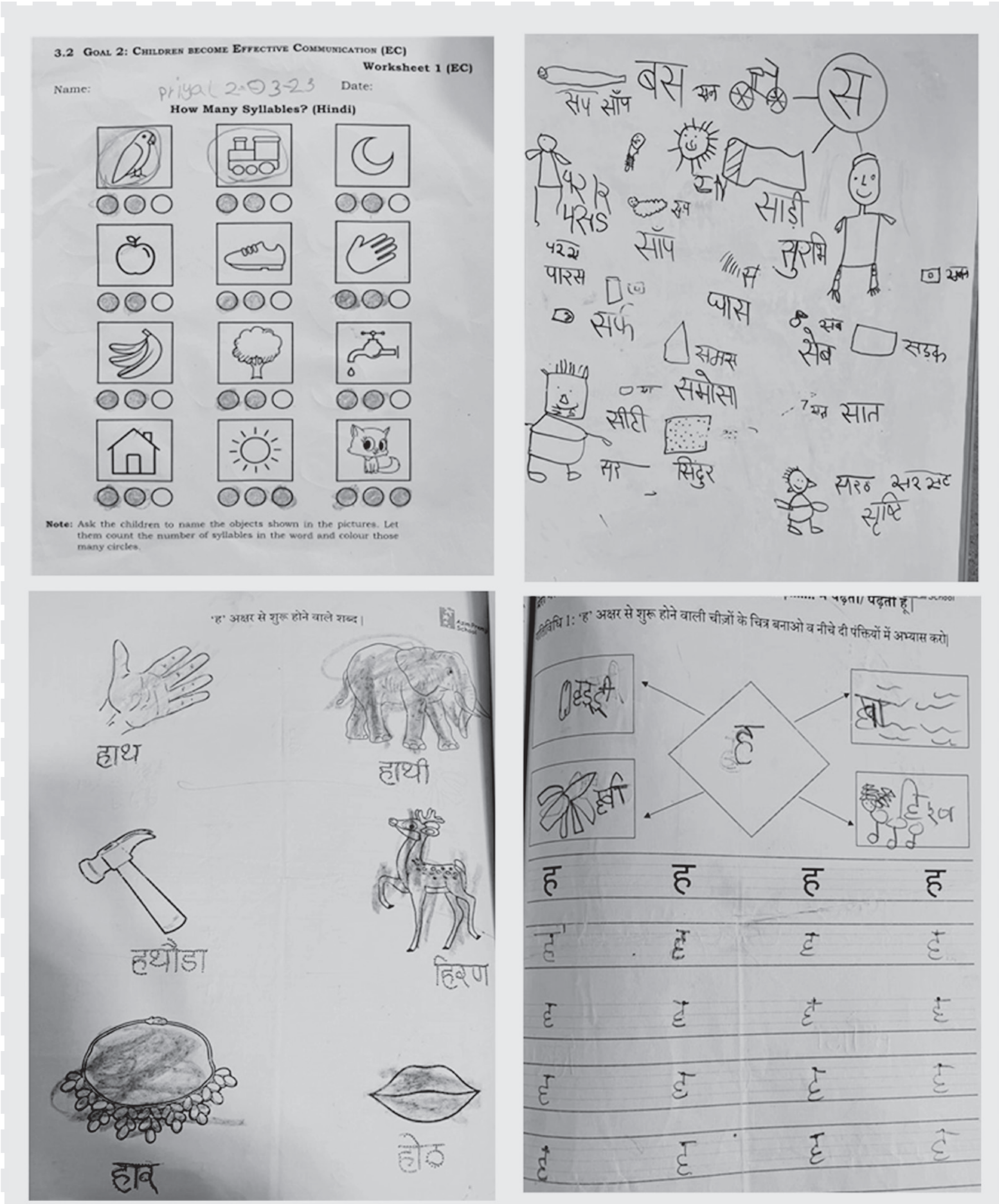
इसी सन्दर्भ में एक खेल और खेला गया। इसमें ज़मीन पर चॉक का इस्तेमाल करके गोले बनाए गए। बच्चों से कहा गया कि हर शब्द बोलने के साथ उन्हें एक गोले में कूदना है। जैसे– "मेरी लाल छतरी खो गई बाज़ार में"। यह वाक्य बोलते समय बच्चे को 7 गोलों में कूदना था। जब बच्चों ने इस खेल को मज़े के साथ खेलना शुरू किया, खेल को एक स्तर और बढ़ाया गया, अब उन्हें 'लाल' की जगह रंग बदलना था और 'छतरी' की जगह कोई अन्य वस्तु। फिर इसके अगले स्तर में जगह (बाज़ार) को भी बदलकर कहना था। यह खेल खेलते समय जब कोई बच्ची अटक रही थी तब उसके साथी उसकी मदद भी कर रहे थे, ताकि वो आसपास की चीज़ों के नाम जोड़कर आगे वाक्य बना ले।

अब बच्चों के साथ इस खेल का अगला स्तर खेला गया। मैंने उन्हें दो कार्ड दिए और कहा कि आपको इन दो शब्दों का प्रयोग करते हुए एक वाक्य भी बनाना है। मसलन, यदि किसी बच्चे के पास 'हाथी' और 'पेड़', ये दो शब्द आएँ, तब उसे एक वाक्य इस तरह से बनाना था जिसमें ये दोनों शब्द आ जाएँ। यानी, हाथी पेड़ के नीचे बैठा है; हाथी ने पेड़ के पत्ते खा लिए; आदि। बच्चों को अलग-अलग शब्द बोलते हुए एक-एक गोले के अन्दर कूदना था। बच्चों जो शब्द कार्ड दिए गए थे, उनमें 'मिठाई' कहानी से सम्बन्धित कार्ड ही थे, जैसे– 'हाथी और गन्ना', 'शहद और भालू', आदि। इस खेल के पीछे मेरा उद्देश्य यह था कि बच्चे वाक्य बोलते हुए उस वाक्य में आई भाषा को शब्द इकाइयों की स्पष्टता के साथ समझ सकें और उनकी भाषिक क्षमता विकसित हो सके। वे अपनी अभिव्यक्ति को स्पष्ट रूप से और समझ के साथ ज़ाहिर कर सकें। इसके साथ ही, वे

किसी कविता या गीत को सुनकर उसमें आई शब्द इकाइयों को समझते हुए अपना भाषिक शब्दकोश विकसित कर सकें।

आओ मिलकर ताली बजाओ

इसी तरह से खेलते-खेलते हम शब्दांशों के प्रति जागरूकता की ओर आगे बढ़े। अगले खेल का नाम रखा गया– 'ताली बजाओ नाम बताओ'। उदाहरण के लिए, मैंने कहा 'हाथी'। इसमें दो ताल हैं– 'हा' और 'थी', मतलब मैं दो ताली बजाऊँगी। अब बच्चों को कहा गया कि अपना नाम बोलो और ताली बजाकर ताल बताओ। मसलन, आभा– 'आ' और 'भा' दो ताली; कृतिका– कृ-ति-का; आरुष– आ-रु-ष



तीन ताली; आदि। इस गतिविधि से बच्चों को ध्वनियों को अलग-अलग समझने और उनकी पहचान करने में मदद मिली। अब इस गतिविधि को पहली और आख़िरी ध्वनियों की ओर ले जाया गया। इसमें बच्चों को ही पहचानना था कि किसी भी दिए गए कार्ड पर बने चित्र का नाम क्या है; उसके नाम में कितनी तालियाँ बजेंगी; और उसमें पहली व आख़िरी ध्वनि क्या थी? इसमें बच्चों से यह अपेक्षा नहीं की गई थी कि वे मात्रा को भी अलग करें। मैंने उन सभी के नामों का पहला अक्षर बताया। अब इसी खेल को कहानी के फ़्लैशकार्डों की मदद से आगे बढ़ाया गया। इनमें हाथी, गधा, गाजर, गिलहरी, हलवाई, भालू, गुड़, आदि जैसे कहानी कार्ड थे। इन सभी कार्डों में से वो कार्ड लिए गए जिनमें 'ह' वर्ण की आवृत्ति शुरुआत में थी। मैंने हाथी की पहली ध्वनि बोलकर सुनाई और बच्चों को निर्देश दिया कि अब ऐसे नाम सोचो जो 'ह' से शुरू होते हों। सबसे पहले एक बच्चे ने कहानी में ही आया शब्द 'हलवाई' बताया और दूसरे ने उससे मिलता-जुलता हुआ शब्द 'हलवा' कहा। इसी कड़ी में जब एक बच्चे ने 'गिलहरी' कहा, तब सीधा जवाब देने की जगह मैंने सभी बच्चों से कहा कि गिलहरी की तालियाँ गिनो और पता लगाओ, पहली ताली में 'ह' की आवाज़ सुनाई पड़ रही है क्या? यह पता लगाने के लिए सभी बच्चे बेहद आतुर दिखाई दिए और बार-बार शब्द को बोलते हुए ताली बजाकर पता लगाने के खेल में जुट गए। इसी बीच एक आवाज़ आई, "मैम, इसमें तो 'ह' की ताली पहले बज ही नहीं रही!"

यह समझ जाने के बाद, कि गिलहरी शब्द के उच्चारण में पहली ध्वनि 'ह' नहीं है, बच्चे एक बार फिर से सही शब्दों की तलाश में जुट गए। वे इस काम में एक दूसरे की मदद करने लगे। इस प्रक्रिया से गुज़रते हुए बच्चे अपने पसन्दीदा शब्दों में से एक 'हल' तक पहुँचे। अब इसी तरह, अगली बार जो कार्ड लिए गए (मसलन, गधा, गाजर, गुड़, आदि), उनमें बच्चों ने 'ग' अक्षर पर फ़ोकस किया। इसके साथ ही, हर बार बच्चे जब किसी एक अक्षर से जुड़े शब्द बोलते, मैं उन चीज़ों के चित्र भी बनाती। चित्रों के साथ उनके नाम भी लिख दिए जाते थे। जब बच्चों के काम करने की बारी आई, सबसे पहले उन्होंने चित्रों के माध्यम से अपने शब्दकोश को लिखित रूप में दर्शाया, और बड़े ही चाव से उनमें रंग भरा। इस तरह से लगभग 4 महीनों तक कार्य करने का परिणाम यह हुआ कि इस कक्षा के अधिकांश बच्चे इनवेंटेड स्पैलिंग लिख पाते हैं। (पिछले पृष्ठ पर चित्र देखें) मसलन, यदि कोई बच्चा समोसा लिखना चाहता है, तो वह 'समस' तो लिख ही लेता है। इस प्रक्रिया से गुज़रने के बाद अब बच्चे दो अक्षरों के सार्थक शब्दों को पढ़ और लिख लेते हैं।

सभी चित्र : सोनिया कुंडू

सोनिया कुंडू ढाई साल से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन स्कूल, उत्तरकाशी, उत्तराखंड में अध्यापन कर रही हैं। आपको पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के साथ काम करने का अच्छा अनुभव है।

सम्पर्क : sonia.kundu@azimpremjifoundation.org